BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

प्रदीप कुमार (सहायक प्राध्यापक)
समाजशास्त्र विभाग सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय पी.जी. कॉलेज, साहिया
डॉ0 रवि कुमार (सह प्राध्यापक)
भूगोल विभाग सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय पी.जी. कॉलेज, साहिया
आशा (सहायक प्राध्यापिका)
शिक्षाशास्त्र सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय पी.जी. कॉलेज, साहिया

सारांश

जौनसार बावर, उत्तराखंड का एक जनजातीय क्षेत्र है, जो अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं के लिए जाना जाता है। इसे 1967 में जनजातीय क्षेत्र घोषित किया गया था। इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति दोनों निवास करती हैं, जहां जातिगत विभाजन और सामाजिक असमानताएं स्पष्ट रूप से देखने को मिलती हैं। शोध पत्र में जौनसारी जनजाति की सामाजिक संरचना, जाति व्यवस्था, धार्मिक मान्यताओं, महिलाओं की स्थिति, शिक्षा और आर्थिक गतिविधियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस क्षेत्र में राजपूत और ब्राह्मणों का प्रभुत्व है, जबकि अनुसूचित जातियां, जो यहां के मूल निवासी हैं, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी हैं।

विवाह परंपराओं में बहुपति और बहुपत्नी विवाह का प्रचलन है, और महिलाओं की स्थिति पुरुष प्रधान समाज में अत्यधिक सीमित है, जहां उन्हें संपत्ति और अधिकारों में कोई विशेष स्थान नहीं मिलता। कृषि, पशुपालन और बागवानी इस क्षेत्र की मुख्य आर्थिक गतिविधियाँ हैं।

इस शोध का निष्कर्ष यह है कि जौनसार बावर की जनजातीय संरचना और परंपराओं के बावजूद यहां जातिगत और लैंगिक असमानताएं व्याप्त हैं, जिन्हें सुधारने के लिए शिक्षा, आर्थिक और सामाजिक प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

शब्द कुंजी – जौनसारी जनजाति, महासू, खस, स्याणा, जजोड़ा, मरोज, ठारिया की पूज, ठोडे.

प्रस्तावना

भारत में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं, जो भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक परंपराओं को संजोए हुए हैं। इन जनजातियों का अध्ययन उनकी विशेषताओं और सामाजिक संरचनाओं को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है। उत्तराखंड के देहरादून जनपद के अंतर्गत स्थित जौनसार बावर क्षेत्र एक ऐसा ही जनजातीय क्षेत्र है, जिसे उसकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के आधार पर 1967 में जनजातीय क्षेत्र घोषित किया गया। इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर, ऐतिहासिक महत्व और भौगोलिक विविधता ने इसे समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण बना दिया है।

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

जौनसार बावर मुख्य रूप से टौंस और यमुना नदियों के बीच बसा है और यहां 39 खतों के अंतर्गत 350 से अधिक गांव हैं। यहां की जनसंख्या में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की मिश्रित आबादी है, जिसमें ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य और अन्य जातियां शामिल हैं। क्षेत्र की सामाजिक संरचना में स्पष्ट रूप से जातीय विभाजन और परंपरागत नियमों का पालन देखने को मिलता है, जो समाज के हर स्तर को प्रभावित करता है। यह विभाजन खासतौर से अनुसूचित जातियों और महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर प्रभाव डालता है, जिन्हें समाज के निचले पायदान पर रखा गया है।

जौनसारी समाज में पाई जाने वाली जाति व्यवस्था, धार्मिक परंपराएँ, पारिवारिक संरचना और विवाह प्रणाली इस शोध का मुख्य केंद्र हैं। यहां बहुपति और बहुपत्नी विवाह जैसी प्रथाएँ भी प्रचलित हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और सामाजिक विशिष्टता को रेखांकित करती हैं। इसके साथ ही महिलाओं की स्थिति, जो मुख्यतः परिवार में सीमित अधिकारों और संपत्ति पर नियंत्रण के अभाव के रूप में प्रकट होती है, का विश्लेषण भी किया गया है। यह शोध जौनसार बावर के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के साथ–साथ जातीय असमानताओं और लैंगिक असमानताओं की गहन पड़ताल करता है। सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन के कारण अनुसूचित जातियों और महिलाओं की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है, जिसके लिए शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक जागरूकता के उपाय आवश्यक हैं। इस शोध के अंतर्गत जाति व्यवस्था, धार्मिक विश्वास, पारिवारिक संरचना और आर्थिक गतिविधियों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिससे जौनसार बावर की जटिल सामाजिक संरचना को समझने में मदद मिलेगी।

उद्देश्य

1. जौनसार बाबर की सामाजिक संरचना का समाजशास्त्रीय अध्ययनः जौनसारी जनजाति की सामाजिक संरचना, जाति व्यवस्था, धर्म, और महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करना।
2. सामाजिक संस्थाओं का विश्लेषणः परिवार और विवाह जैसी सामाजिक संस्थाओं की संरचना और उनके कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
3. आर्थिक गतिविधियों का अध्ययनः क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों, जैसे कृषि, पशुपालन और बागवानी, पर शोध करना।
4. जाति व्यवस्था का अध्ययनः जौनसार बाबर में जातिगत स्तरीकरण और जातीय नियमों के प्रभाव का विश्लेषण करना।

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि के रूप में अन्वेषणात्मक अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया है तथा आंकड़ों (डाटा) के एकत्रीकरण के लिए द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है।

जाति व्यवस्था

जौनसार बावर क्षेत्र, जो उत्तराखंड के देहरादून जिले में स्थित है, एक जनजातीय क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, लेकिन यहां पर भी एक सुस्पष्ट जाति व्यवस्था विद्यमान है। अनुसूचित जनजातियों के साथ–साथ अनुसूचित जातियां भी इस क्षेत्र में निवास करती हैं। यहां जातीय विभाजन स्पष्ट रूप से दिखता है, जहां एक ओर खस राजपूतों और ब्राह्मणों जैसी बाहरी जातियां समाज के ऊपरी पायदान पर हैं, वहीं दूसरी ओर स्थानीय अनुसूचित जातियों जैसे सुनार, बढ़ई, लोहार, जोगड़ा, कोल(कोल्टा), तूरी आदि को निचले सामाजिक दर्जे में रखा गया है। इन जातियों को मूल निवासी माना जाता है, लेकिन उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति आज भी कमजोर है, जिसका प्रमुख कारण खस जाति द्वारा किया गया ऐतिहासिक शोषण और दासता है।

जाति व्यवस्था की कठोरता इस क्षेत्र में आज भी बनी हुई है, जहां जातीय नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है। उदाहरण के लिए, अंतर्जातीय विवाह का निषेध, धार्मिक स्थलों में प्रवेश की सीमाएँ, और जातिगत अलगाव का पालन समाज के विभिन्न स्तरों पर होता है। महासू मंदिर, जो इस क्षेत्र के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र है, यहां की जातीय

संरचना को दर्शाता है। मंदिर की प्रबंधन व्यवस्था में राजपूत और ब्राह्मण जातियों को उच्च भूमिका दी जाती है। मंदिर के विभिन्न कार्यों में, जैसे ठाणी (मंदिर के सेवक) और भंडारी (मंदिर के प्रबंधक), केवल इन उच्च जातियों को शामिल किया जाता है। अनुसूचित जातियों को इस प्रकार के धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेने से वंचित रखा जाता है, क्योंकि उन्हें ''अशुद्ध'' माना जाता है। यह स्थिति यहां की पारंपरिक जाति संरचना और सामाजिक पदानुक्रम को दिखाती है, जहां देवता और भक्तों के बीच संबंध भी जातिगत विभाजन के आधार पर तय होते हैं।

जौनसार बावर की जाति व्यवस्था न केवल सामाजिक बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी प्रभावी है। इस व्यवस्था के तहत, जातियों के बीच सामाजिक दूरी और पदानुक्रम का स्पष्ट विभाजन है, जहां उच्च जातियां देवताओं के करीब मानी जाती हैं और निम्न जातियों को देवता से दूर रहना पड़ता है।

परिवार और विवाह

जौनसार बावर क्षेत्र की पारिवारिक संरचना मुख्य रूप से संयुक्त परिवार पर आधारित है, जिसमें परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहते हैं और घर का सबसे बड़ा सदस्य या भाई परिवार का मुखिया होता है,

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

जिसे स्याणा कहा जाता है। यह स्याणा घर के सभी प्रमुख निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार होता है और परिवार के सदस्यों की आर्थिक और सामाजिक जरूरतों का ध्यान रखता है। इसके अलावा, परिवार की सबसे वरिष्ठ महिला, जिसे घरयाई कहा जाता है, घर की देखभाल और भोजन की व्यवस्था करने के लिए जिम्मेदार होती है।

परिवार के सदस्यों को अलग–अलग जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं, जैसे कि गाय और भैंस की देखभाल करने वाले सदस्य, बकरी पालने वाले, और खेती–बाड़ी का काम करने वाले। यह पारंपरिक व्यवस्था जौनसार बावर की कृषि और पशुपालन पर आधारित अर्थव्यवस्था के अनुरूप है, जहाँ खेती और पशुपालन परिवार की आर्थिक रीढ़ होती है।

विवाह की प्रथाएं

जौनसार बावर की विवाह प्रणाली भी विशिष्ट है, जहाँ बहुपति विवाह (एक महिला के कई पति), बहुपत्नी विवाह (एक पुरुष की कई पत्नियाँ), और समूह विवाह जैसे विविध प्रकार के विवाह देखे जाते हैं। विशेष रूप से, जजोड़ा विवाह का उल्लेख महत्वपूर्ण है, जो तीन प्रकार के होते हैं बेवा का जजोड़ा,बोइदोदी का जजोड़ा, और बाजदिया का जजोड़ा। इन विवाहों में सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर वैवाहिक प्रक्रिया की धूमधाम और परंपराएँ अलग–अलग होती हैं। जौनसार बावर के विवाह में सामूहिक परिवार व्यवस्था और समुदाय–आधारित विवाह प्रणाली की झलक मिलती है, जहाँ परिवार और समाज के अन्य सदस्य विवाह की पूरी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर और वधू के परिवारों के बीच साईं (रुपए का प्रतीक) का आदान–प्रदान विवाह के तय होने का प्रतीक होता है।

महिलाओं की स्थिति

जौनसार बावर में महिलाएं एक पितृसत्तात्मक समाज में रहती हैं, जहाँ उनका अधिकार सीमित होता है। संपत्ति और परिवार के अन्य महत्वपूर्ण संसाधनों पर महिलाओं का अधिकार नहीं होता है। हालांकि महिलाएं घर के भीतर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन सामाजिक और आर्थिक रूप से उन्हें पुरुषों के अधीन माना जाता है। महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों को यहां उतना महत्व नहीं दिया जाता, और वे सामान्यतः घरेलू कार्यों और कृषि में सहयोग करने तक सीमित रहती हैं।

महिलाओं को अपने परिवार और ससुराल के अलावा अन्य किसी गांव में जाने की स्वतंत्रता भी बहुत सीमित होती है, जो इस क्षेत्र के पारंपरिक और सामुदायिक नियमों के आधार पर निर्धारित होती है। हालांकि महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, उन्हें निर्णय लेने में बहुत कम स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

त्यौहार एवं परंपराएं

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

जौनसार बावर क्षेत्र अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और अनोखी परंपराओं के लिए जाना जाता है। यहाँ के विभिन्न त्यौहार और रीति–रिवाज स्थानीय जनजातियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। अधिकांश त्यौहार कृषि और प्रकृति से जुड़े हुए हैं और इनमें देवताओं के प्रति आस्था का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है।

बूढ़ी दिवाली (दियाई):

जौनसार बावर में दिवाली एक विशेष रूप में मनाई जाती है जिसे 'बूढ़ी दिवाली' या 'दियाई' कहा जाता है। यह हिंदू दिवाली से लगभग एक महीने बाद आती है। त्यौहार के दौरान गांव के पुरुष एक जगह पर लकड़ियों का ढेर जलाते हैं जिसे 'डिम्सा' कहते हैं। इसके चारों ओर नृत्य करते हुए और पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ गीत गाते हैं।

मरोज (माघ का त्यौहार) यह त्यौहार माघ के महीने में मनाया जाता है और इसमें बलि देने की परंपरा है। इस समय पर परिवार के सभी सदस्य, जो विभिन्न स्थानों पर निवास करते हैं, एकत्र होते हैं। यह त्यौहार लगभग एक महीने तक चलता है और विवाहित महिलाओं को मायके से 'माघ का बांटा' (बकरे का सूखा मांस और चावल) दिया जाता है।

ठोड़े (ढोऊड़ा नृत्य, धनुष युद्ध का खेल)

ठोडे एक पारंपरिक खेल है जिसमें एक व्यक्ति अपने पैरों को ढककर उनका बचाव करता है, जबकि दूसरा व्यक्ति धनुष से तीर चलाकर उसके पैरों को भेदने की कोशिश करता है। इस खेल को धनुष युद्ध के रूप में जाना जाता है और यह क्षेत्र की परंपराओं का हिस्सा है।

जात्रा मेला

जात्रा मेला एक प्रमुख मेला है जो धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसके अलावा, चैत की आंठो, नौ राते, पायंता, और जागड़ा जैसे कई अन्य त्यौहार भी यहाँ मनाए जाते हैं जो कृषि, ऋतु परिवर्तन और देवी–देवताओं की पूजा से संबंधित होते हैं।

धार्मिक विश्वास

जौनसार बावर का समाज धार्मिक आस्थाओं में गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ के लोग मुख्य रूप से अपने क्षेत्रीय देवी–देवताओं की पूजा करते हैं।

महासू देवता

जौनसार बावर का मुख्य देवता महासू देवता है, जिनके चार भाई पवासिक, चालदा, वासिक, और बौंठा हैं। इन देवताओं को क्षेत्र का शासक माना जाता है, और धार्मिक, सामाजिक, और राजनीतिक दृष्टि से इन्हें सर्वोच्च स्थान दिया जाता है।

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

देवशाही

जौनसार बावर में देवशाही की प्रथा है, जहाँ देवताओं को अपने जीवन का प्रमुख संचालक माना जाता है। महासू देवता के अलावा, सिलगुर देव, विजट देवता, गुरुवा, सिगोरमे, भूत देवता, और कुकुरसी देवता जैसे स्थानीय देवी–देवताओं की भी पूजा की जाती है।

अनुष्ठान और मान्यता:

देवताओं से संबंधित कई अनुष्ठान किए जाते हैं, जिनमें मुख्यतः मानता चढ़ाई जाती है। इसमें जातर, घांडवा, कटवा बकरा, और छतर चढ़ाने जैसी प्रथाएं शामिल हैं। ठारिया की पूज एक प्रमुख अनुष्ठान है, जो गाँव की समृद्धि और सुरक्षा के लिए किया जाता है। जौनसार बावर का धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन स्थानीय देवताओं और पारंपरिक अनुष्ठानों के इर्द–गिर्द घूमता है। त्यौहार और धार्मिक मान्यताएँ यहां के सामाजिक ताने–बाने का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो समाज को एकजुट रखने और उनकी आस्थाओं को जीवित रखने में सहायक होती हैं।

आर्थिक गतिविधियां:

जौनसार–बावर क्षेत्र एक आदिवासी इलाका है, जहां की आर्थिक गतिविधियां मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन, बागवानी, और पर्यटन पर आधारित हैं। क्षेत्र की 95 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। यहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार खेती–बाड़ी और पारंपरिक खेती की पद्धतियों में निहित है।

कृषि:

कृषि इस क्षेत्र की प्रमुख आर्थिक गतिविधि है। जौनसार–बावर में कृषि को दो प्रकार की भूमि में विभाजित किया गया है: सिंचित भूमि, जिसे 'ग्यारकी' कहा जाता है, और असिंचित भूमि, जिसे 'उखड़ी डोखरे' या खेत कहा जाता है। यहाँ की खेती पहाड़ी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप होती है। गेहूं, धान, मक्का, मंडुआ, और जौ जैसी फसलें यहां उगाई जाती हैं। इसके अलावा, नकदी फसलों में आलू, अदरक, मटर, और टमाटर जैसी फसलें उगाई जाती हैं। ये फसलें न केवल स्थानीय बाजार में खपत होती हैं, बल्कि इन्हें अन्य क्षेत्रों में भी निर्यात किया जाता है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

पशुपालन:

कृषि के साथ–साथ पशुपालन इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जौनसार–बावर के लोग गाय, भैंस, बकरी, और भेड़ों का पालन करते हैं। इससे उन्हें दूध, खाद, ऊन, और कृषि कार्यों के लिए बैल जैसी आवश्यकताएं पूरी होती हैं। पशुपालन और कृषि आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं, जहां पशुओं से प्राप्त खाद का उपयोग खेतों में किया जाता है।

बागवानी:

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

जौनसार–बावर का पहाड़ी क्षेत्र बागवानी के लिए भी अनुकूल है। यहाँ के लोग सेब, अखरोट, आड़ू, और कीवी जैसी फसलों का उत्पादन करते हैं। यहाँ की जलवायु और मिट्टी इन फलों के उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। बागवानी क्षेत्र के लोगों के लिए एक अतिरिक्त आय का स्रोत प्रदान करती है और यह एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक गतिविधि के रूप में उभर रही है।

पर्यटनः

जौनसार–बावर प्राकृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक रूप से एक आकर्षक स्थल है, लेकिन आदिवासी क्षेत्र होने के कारण यहाँ का पर्यटन अभी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाया है। क्षेत्र में सम्राट अशोक के शिलालेख, पुरातात्विक स्थलों, देववन की व्यास गुफा, और महासू देवता का मंदिर जैसे ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों के कारण पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। अगर इसे ठीक तरह से विकसित किया जाए तो यह स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न कर सकता है।

निष्कर्ष

जौनसार बावर की जनजातीय क्षेत्रीय विशिष्टता और सांस्कृतिक धरोहर के बावजूद, यहाँ की सामाजिक संरचना और व्यवस्था में कई विषमताएं देखने को मिलती हैं। यह क्षेत्र अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के विभिन्न समुदायों का मिश्रण है, जिसमें जाति व्यवस्था और लैंगिक असमानता प्रमुख मुद्दे हैं।

जाति व्यवस्था के संदर्भ में, जौनसार बावर में जातिगत विभाजन और पदानुक्रम की स्पष्ट संरचना देखी जा सकती है। खस राजपूत और ब्राह्मण, जो बाहरी जातियाँ हैं, वे सामाजिक और धार्मिक प्रमुखता में हैं, जबकि स्थानीय अनुसूचित जातियाँ जैसे सुनार, बढ़ई, और जोगड़ा, कोल आदि आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़ी हुई हैं। इसके परिणामस्वरूप, जातिगत विभाजन और सामाजिक असमानता की गहरी जड़ें यहाँ विद्यमान हैं। विशेष रूप से, अनुसूचित जातियों के सदस्य आज भी शोषण और असमानता का सामना कर रहे हैं, और उनके सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार की आवश्यकता है।

महिलाओं की स्थिति पर दृष्टि डालें तो, जौनसार बावर में पुरुष प्रधान समाज होने के कारण महिलाओं की सामाजिक स्थिति भी अत्यंत कमजोर है। महिलाओं को संपत्ति पर अधिकार नहीं है, और उनकी शिक्षा और सामाजिक गतिविधियों पर भी कई सीमाएं हैं। उनके ससुराल और मायके के बाहर यात्रा की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध है, जो उनकी सामाजिक स्थिति और विकास में एक महत्वपूर्ण बाधा बनती है। जौनसार बावर का विकास केवल आर्थिक और भौगोलिक संसाधनों का उपयोग करके ही नहीं किया जा सकता, बल्कि जातिगत और लैंगिक असमानताओं को समाप्त करके भी इसे संभव बनाया जा सकता है। अनुसूचित जातियों और महिलाओं के लिए शैक्षिक, सामाजिक, और आर्थिक प्रोत्साहन और सुधार की दिशा में ठोस

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 1, January-March2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

कदम उठाने की आवश्यकता है, ताकि इस क्षेत्र का समग्र सामाजिक विकास हो सके और एक समावेशी और समान समाज की दिशा में आगे बढ़ा जा सके।

संदर्भ सूची

1. शाह, टीकाराम. जौनसार बावर ऐतिहासिक संदर्भ. 2016, बिनसर पब्लिकेशन।
2. बलूनी, डॉ दिनेशचंद्र. जनपद देहरादून इतिहास और समाज. 2020, समय साक्ष्य पब्लिकेशन।
3. उनियाल, हेमा. जौनसार बावर रवांई–जौनपुर. 2018, उत्तरा बुक्स पब्लिकेशन।
4. वाल्टन, एच जी. गढ़वाल हिमालय का गजेटियर. 2005, सरस्वती प्रेस देहरादून।
5. विलियम्स, जी आर सी. देहरादून का इतिहास. 2021, विनसर पब्लिकेशन देहरादून।
6. भट्ट, जी एस. कल्ट, रिलीजन, एंड सोसायटी. 2013, रावत पब्लिकेशन।
7. रतूड़ी, पं. हरिकृष्ण. गढ़वाल का इतिहास. 2020, भागीरथी पब्लिकेशन देहरादून।